गांधी विचार एवं समाजकार्य

भणात स्टेनली अ
समाजशास्त्र भवन,
भावनगर युनिवर्सिटी,
भावनगर.

गुजरात के पोरबंदर में जन्मे गांधीजी एक प्रतिभाशाली व्यकित थे। उनके विचार बहुमुखी थे। उन्होने अनेक विषयो पर अपने विचार व्यक्त किये है। प्रत्येक विषय को उन्होने नये दृष्टिकोणो से देखा है। समाजसुधार के कार्य में गांधीजी ने महत्वपूर्ण योग दिया है। यह क्षेत्र ऐसा है जहाँ अनेक विषयो पर परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से विचार स्वतः ही आ जाते है। क्योंकि समाज के किसी एक पहलु को या पक्ष को जानने से समाज सुधार नहीं हो सकता। इसके लिये संपूर्ण क्षेत्र को जानना समझना पडता है। समाज की आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक एवं नैतिक उन्नति से ही संपूर्ण उन्नति हो सकती है।

गांधीजी अर्थशास्त्र के ज्ञाता, एक राजनीतिज्ञ एवं शिक्षाशास्त्र के ज्ञाता थे। उनके विचार विभिन्न विषयों से सम्बन्धित है। उनके ये विचार उनकी आत्मकथा में भी पाये जाते है । समाजसुधार के कार्यों में देखे तो उनमें उन्हों ने जाति, वर्ग, अस्पृश्यता, स्त्री-सुधार, धर्म, दलित, उत्कर्ष आदि के कार्य किये है।

गांधीजी ने बताया है कि व्यक्ति सें बहुत सी बुराईयाँ है। किन्तु फिर भी व्यक्ति ही श्रेष्ठ प्राणी है। उनके अनुसार प्रारंभिक युग में मनुष्य पशु प्रवृत्ति का था किन्तु सामाजिक प्रकिया के घ्वारा हम पशु से मनुष्य की अवस्था में आये और गांधीजी ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें सत्य, अहिंसा और प्रेम पर ही जीवन आधारित हो। व्यक्ति व्यक्ति के बीच प्रेम और सदभावना बढ़े, समानता की वृध्धि हो, सभी को उन्नत्ति के लिए समान अवसर प्राप्त हो ।

गांधीजी रस्किन की पुस्तक unto the last से बहुत प्रभावित थे। उन्हों ने इस पुस्तक से कुछ निष्कर्ष निकाले है।

(१) व्यक्ति का हीत समस्त व्यक्तियों के हीत में निहीत है।
(२) वकील और नाई के कार्य का महत्त्व समान है। क्योंकि व्यक्ति को अपने कार्य घ्वारा जीवन अर्जित करने का समान अधिकार है।
(३) कृषक, श्रमिक और कारीगर का जीवन ही वास्तव में सर्वोत्कृष्ठ है।

उपरोकत विचारों ने गांधीजी के चिन्तन को एक नई दिशा दी। इन्हीं तथ्यों के आधार पर वे ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे। जहाँ न कोई छोटा हो न बड़ा, व्यकित ही सर्वोत्कृष्ठ हो। प्रत्येक व्यक्ति का स्थान समाज में समान होगा। समाज में सुधार लाने के लिए व्यक्ति का नैतिक आचरण अच्छा होना चाहिए, नैतिक आचरण के बिना अच्छे समाज का निर्माण सम्भव नहीं हो सकता ।

गाँधीजी के नैतिक आदशों में 'सत्य' सबसे पहलाआदर्श हे उन्होंने सायको ही ईश्वर माना है। सत्य शुध्ध अन्तरात्मा की वाणी है।सत्य वही हे जो आपको सत कर्म करने की प्रेरणा दे। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन सत्य के आदर्श है। उन्हों ने सत्य को ही सत्य वहीं है जो आपको सत् कर्म नियम पर आधारित होना चाहिए । गांधीजी आत्मप्रेरित सिध्धांतकार थे क्योंकि उन्हों ने राजनैतिक किया के संगठन के लिए कुछ सुस्पष्ट सामाजिक सिध्धांतों को जन्म दिया। गांधीजी को सर्वप्रथम आकिका में और बाद में भारत में शक्तिशाली अहिंसा के सिध्धात को विकसित किया। जिसने न केवल भारत को परिवर्तित किया अपितु द्वितीय महायुध्ध के बाद अमरीकी नागरिक अधिकार आंदोलन को भी प्रभावित किया। सत्य और अहिंसा उनकी विचारधारा के मूल मंत्र कहै जा सकते है।

गांधीजी का मुख्य उद्देश्य ऐसे समाज की स्थापना करने का था। जिसमें सत्य, अहिंसा प्रेम हो, जिस में व्यक्ति, व्यक्ति का शोषण न करे। सहयोग और समानता की भावना से काम करे सर्वोदय सबका उदय, समाजवाद का उत्कृष्ठ स्वरूप है। इस में किसी भी वर्ग की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसका परम उद्देश्य है सबका कल्याण, सबका अधिकत्तम हीत। समाजवाद में त्याग की भावना है। जिस में प्रेम, अहिंसा, अपरिग्रह, संरक्षणता का सिध्धांत है। यह हमें शिक्षा देता है कि दूसरों से प्रेम करो, स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को सुखी बनाओं। दूसरों की सेवा करना ही मानवजाति का परम धर्म है।

गांधीजी ने अस्पृश्यता के बारे में बताया है कि अस्पृश्य जातियों के मस्तिष्क में धर्म संम्बधित भावना का बहुत गहरे ढंग से बिठाया गया था। उन्हें कर्म का सिध्धांत खुब पठाया गया था। इसलिए समाज सुधार के लिए जब हरिजन बस्तियों मे जाते थे और उनसे पानी पीने के लिए मांगने पर वे यह कहकर पानी पीने नहीं देते थे कि बड़ी जातियो के व्यक्तियों को पानी देना हमारे लिये अधर्म है। इसलिए गांधीजी ने कहा था कि अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए हमें प्रत्येक कुर्बानी देने के लिए तैयार रहना चाहिए । गांधीजी अस्पृश्यता को एक कलंक मानते थे।

विनोबाजी के अनुसार सर्वोदय कुछ का या बहौत का तो अधिकत्तम उन्नति नहीं चाहता । हमें अधिकत्तम से अधिकत्तम सूख से संतुष्ठ नहीं है। हम तो केवल एक ही और सबकी, ऊंचे और नीचे की, सबल और निर्बल की बुध्धिमान और बुध्धिहीन की भालाई से ही संतुष्ट हो सकते है। सर्वोदय शब्द एक उत्कृष्ट और सर्व व्यापक भावना को अभिव्यक्त करता है। सर्वोदय की उन्नति के लिए समाज का एक नया ढाँचा बनाना पड़ेगा जिसका अपना धर्म व्यवसाय संगठन और सेवाकार्य करने की पध्धति, प्रणाली होगी । इसमें सभी धर्म के व्यक्ति होगे जो धर्म के आधार पर वर्ग न होंगे क्योंकि धर्म व्यक्तिगत विश्वास की वस्तु है।

रामकृष्ण के शिष्य विवेकानंद तथा अन्य शिष्यों ने भी सुधार के कार्य किये। यह सुधार आन्दोलन रामकृष्ण के वचनों पर आधारित है। यह धार्मिक समन्वय की सबसे महान चेष्टा है। रामकृष्ण परमहंस ने सभी धर्मों को स्वीकार किया और किसी का प्रत्याख्यान नहीं किया। वे एक साथ ही हिन्दू, मुसलमान और इसाई थे। उनके अनुसार जाति व्यवस्था ऐसे लोगों के लिये है जो ईश्वर से दूर है और जो ईश्वर भक्त है उनकी कोई जाति नहीं ।

पो। आर. के. मुखर्जी के सामाजिक परिस्थिति सम्बन्धी विचार पाश्चात्य समाज वैज्ञानिको ध्वारा पभावित है। तथापि उन्हों ने कई स्थानों पर उनसे भिन्न भत भी प्रकट किये है। उन्हों ने भारत के नव निर्माण के संन्दर्भ मे मूल्यों को रेखांकित कर यह कहा है कि भारत के नव-निर्माण की योजना बनाते समय मात्र तत्कालीन और प्रत्यक्ष समस्याओं को ही घ्यान में नहीं रखा जाना चाहिए अपितु ये विकास योजनाएँ मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए। उन्हों ने श्रमिक वर्ग का विश्लेषण भी किया है और बताया कि औद्योगिकरण के फलस्वरूप उत्पन्न गंदी बस्तियाँ तथा इनकी समस्याओं अवैद्य मद्यपान, नशीली दवाओं का सेवन, वेश्यावृत्ति, जुआखोरी, सामाजिक अपराध तथा आवास के बदतर हालात आदि के प्रति सुधारात्मक कदम उठाये जाना चाहिए । भारतीय धर्मो की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए मुखर्जी ने लिखा है कि इनमें ही विशिष्ट प्रकार के विश्वासों या संस्कारों का आग्रह नहीं है, बल्कि इन सभी धर्मो का लक्ष्य परम सत्य की खोज रहा है। यदि इन धनों के धार्मिक विधि विधानों को ठीक ढंग से व्याख्यायित किया जाय तो स्पष्ट हो सकता है कि इनमें मूल्यों और प्रतिमानों का ऐसा ढाँचा अन्तहिन है जिसमें विभिन्न समुह एक तथ व्यवस्थित रूप से कार्यान्वित हो सके ।

समापन

सामाजिक विकास और परिवर्तन पर कई विचारधाराओं ने समाज पर गहरा प्रभाव छोडा है । समाज में विकास परिवर्तन कुछ आधारों से बनता है। जैसे विचारधाराक किसी भी जाति, संगठन, धर्म को दिशा प्रदान करती है। भारत में व्याप्त घार्मिक व्यवस्था में कार्यात्मक अभिगम के नये विचार घ्वारा, नये मूल्यों के घ्वारा समाज के विभिन विचारधारा विभिन्न समूह के बीच सामान्य विचारधारा के आधार पर महात्मा गांधी ने समाज को नये विचारों के साथ जोड़ने की बात बताई है । विनोबाजी के सर्वोदय विचार में उत्कृष्ट और सर्व व्यापक भावना की अभिव्यक्ति होती है। इस के लिए ढाँचे का निर्माण और अपना धर्म व्यवसाय संगठन और सेवाकार्य की और रामकृष्ण सुधारवादी प्रवृत्ति में जाति धर्म के क्षेत्र में भी प्रभाव देखने को मिलता है ।

प्रो. आर. के. मुखर्जी ने बताया है कि सामाजिक समस्याओं के प्रति सुधारात्मक कदम उठाने की बात में ऐसे मूल्यों को प्रतिमान बनाया जाय जिससे समाज में एक आदर्श व्यवस्था कार्यान्वित की जाय। विचारधारा से समाज को सुगठित बनाया जा सकता है। आदर्श मूल्यो के प्रतिमान समाजकार्य में उपयोगी हो सकते है। जिससे समाज निर्माण हो सके ।

ईस प्रकार सुधारवादी विभिन्न सामाजिक, धार्मिक विचारधारा को एक साथ समन्विन कर नया ढाँचा विकास की और अग्रसर बनाया जाय ।

संदर्भ

1) डॉ सुरेंद्रसिंह
डॉ पी. डी मिश्र 2009
"समाजकार्य" न्यू रॉयल बुक कम्पनी लखनऊ

2) ધનશ્યામ શાહ 2004
“અર્થાત” ગ્રંથ 23 અંક 3-4 સેન્ટર ફોર સોશિયલ સ્ટેડીઝ, સુરત,

3) સત્યકામ જોશી
કિરણ દેસાઈ ૨૦૦૬
"અર્થાત" ગ્રંથ ૨૪ અંક -૪ સેન્ટર ફોર સોશિયલ સ્ટેડીઝ, સુરત